राजलदेसर, 1 फरवरी। अर्हत् वा“मय के एक महत्वपूर्ण सूत्र का विश्लेषण करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि साधक साधना करता है और साधना काल के दौरान विभिन्न भाव भी चित्त में उभर सकते हैं। यह आत्मा अनेक चित्तोंवाली होती है। विरोधी चित्तों वाली भावना भी देखी जा सकती है। सन्तोष और लोभ के भाव भी देखे जा सकता हैं। कभी सारल्य का दर्शन होता है तो कभी कौटिल्य के दर्शन का भी। परिस्थितियां बदलती रहती है। जो आज है वो कल हो या न हो। उन्होंने कहा – अनेक परिस्थितियों को सहन करने वाला कभी दुःखी नहीं बन सकता। जो सहन नहीं करता वह दुःखी हो जाता है, दिमाग में बैठी संवेदना आदमी को दुःखी बना देती है। सहनशील व्यक्ति परिस्थितियों को अपनी इच्छानुसार ढाल लेता है। अतः साधु को सहिष्णु बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

संघ और एकांकी जीवन साधना पर बोलते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा – वर्तमान में हमारी साधना संघबद्ध साधना है । संघ में रहने पर साधक के यदि विचलन–अविचलन की स्थिति आ जाएं तो सभालने वाले मिल जाते हैं। डूबते को तिनके का सहारा मिल जाता है। परन्तु संघीय जीवन में परस्परता न हो तो वह अभिशापित भी हो सकती है। परस्परता रहे तो वरदान साबित हो सकती है।

उन्होंने कहा – संघ में व्यक्ति के बजाए संघ का महत्व है। व्यक्ति स्थायी नहीं है परन्तु संघ चिरस्थायी है। आज हम तेरापंथ धर्मसंघ को देखते है तो 250 वर्षों पूर्व के व्यक्ति आज हमारे सामने नहीं है। लेकिन संघ आज भी विद्यमान है। संघ के हितों के लिए निजी हितों का परित्याग करना चाहिए। संघ–निष्ठा, आचार–निष्ठा, आचार्य–निष्ठा, मर्यादा–निष्ठा, विनय–निष्ठा ये पंचामृत है जिसका पान करने से जीवन का कल्याण निश्चित है।

सेवा व्यवस्था पर बोलते हुए आचार्यश्री ने कहा कि जहां संघ है वहां सेवा की भी व्यवस्था रहती है, भावना रहती है। हमारा शरीर संघ की सेवा में प्रयुक्त होता रहे, ये अच्छी बात है।

गुरुदेव की इस बात पर साध्वी–समाज की तरफ से सेवा–केन्द्रों पर वृद्ध साध्वियों की सेवा हेतु नियुक्ति करवाने का निवेदन किया गया तो संतों में कमलकुमारजी, मुनि आलोककुमारजी सहित कई सन्तों ने भी सेवा के लिए अपने आप को प्रस्तुत, समर्पित किया एवं सेवा केन्द्रों पर नियुक्ति हेतु निवेदन किया।

आज चतुर्दशी होने के अवसर पर हाजिरी का वाचन किया गया व आचार्य भिक्षु द्वारा रचित मर्यादाओं का वाचन किया गया। इससे पूर्व 'आचार्य महाप्रज्ञ को नमन हमारा' कार्यक्रम चला, जिसमें साधु–साध्वियों ने हिन्दी कविताओं का पठन किया।

इस अवसर पर विधायक राजकुमार रिणवां ने कहा – गुरुदेव जो शब्द बोलते हैं, हमें तो उनको सुनकर को ग्रहण करना है। उनमें जो ताकत है उससे हमें एक नई प्रेरणा मिलती है। जिस भूमि पर सन्तों के चरण टिकते हैं, उनका पावन सान्निध्य मिलता है उससे सभी का कल्याण होता है।

इस अवसर पर तुलसी निकेतन, उदयपुर के छात्र–छात्राओं एवं व्यवस्थापकों का एक दल आध्यात्मिक भ्रमण करने एवं गुरुदर्शनों हेतु उपस्थित हुआ। तुलसी निकेतन के छात्रावास के व्यवस्थापकों ने इसके उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बच्चों ने प्रेक्षा–ध्यान, जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत से सम्बन्धित कई प्रयोग करके दिखाएं। विधायक राजकुमार रिणवां का आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकारी अध्यक्ष मंगतमल दूगड़ ने मोमेण्टो एवं साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत ने किया।